This PDF you are browsing now is a digitized copy of rare books and manuscripts from the Jnanayogi Dr. Shrikant Jichkar Knowledge Resource Center Library located in Kavikulaguru Kalidas Sanskrit University Ramtek, Maharashtra.

KKSU University (1997- Present) in Ramtek, Maharashtra is an institution dedicated to the advanced learning of Sanskrit.
The University Collection is offered freely to the Community of Scholars with the intent to promote Sanskrit Learning.

Website
https://kksu.co.in/

Digitization was executed by NMM

https://www.namami.gov.in/

Sincerely,

Prof. Shrinivasa Varkhedi
Hon'ble Vice-Chancellor

Dr. Deepak Kapade
Librarian

Digital Uploaded by eGangotri Digital Preservation Trust, New Delhi
https://egangotri.wordpress.com/

CC-0. In Public Domain.Kavikulguru Kalidas Sanskrit University Ramtek Collection

कविकुलगुरु कालिदास संस्कृत विश्वविद्यालय, रामटेक

हस्तलिखित संग्रह

दाखल क्र M90 विषय मंत्रशास्त्र

नाव. चौविस गायत्री (Mss)

लेखक/लिपीकार

पृष्ठ 14 काळ — पूर्ण/अपूर्ण

Checked 20

CC-0. In Public Domain.Kavikulguru Kalidas Sanskrit University Ramtek Collection

(2)
Complete

(42)

अथ चौवीसगायत्री

गायत्री चोवीस

CC-0. In Public Domain.Kavikulguru Kalidas Sanskrit University Ramtek Collection

॥ गा० ॥

१ श्री॥ मायनमः ओं उत्तिष्ठंति महाभूता ये भूता भूमिपालकाः ॥ भूता
नामनरोधेन ब्रह्मकर्म समाचरेत ॥ १ ॥ ओं आगच्छ वरदे देवी अक्षरे
ब्रह्मवादिनी ॥ गायत्री छंदः सां माता ब्रह्मयोनि नमोस्तुते ॥ २ ॥ इत्या
वाहनं ॥ ओं अस्य वसिष्ठ शापमोचनमंत्रस्य ॥ वसिष्ठ ऋषीरनुष्ट
प् छंदः ॥ श्री विष्णुर्देवता वसिष्ठ शापमोचने जपे विनियोगः ॥ अहो
महाव्रवक्तृ रूपे दिव्ये सिध्ये सरस्वती ॥ अजरे अमरे चैव वसिष्ठ शाप ॥ १ ॥
मुक्तो भवः ॥ २ ॥ शापमोचन ॥ ओं वाक् वाक् ॥ ओं प्राणः प्राणः ओं चक्षुः

चक्षुः ॥ ओं श्रोत्र श्रोत्र ॥ ओं रुद्र रुद्र ॥ ओं ललाटे ललाटे ॥ ओं नाभी ॥
नाभी ॥ ओं हृदि हृदि ॥ ओं कंठे कंठे ॥ ओं शिरः ॥ ओं शिखा ॥ ओं कवच ॥
ओं भूर्भुवः स्वः ॥ ओं तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि धियो योनः
प्रचोदयात् ॥ ओं भूः अंगुष्ठाभ्यां नमः ॥ ओं भुवः तर्जनीभ्यां नमः ॥ ओं ॥
स्वः मध्यमाभ्यां नमः ॥ ओं तत्सवितुर्वरेण्यं अनामिकाभ्यां नमः ॥ ओं भ
र्गो देवस्य धीमहि कनिष्ठिकाभ्यां नमः ॥ धियो योनः प्रचोदयात् ॥ कर
तलकरपृष्ठाभ्यां नमः ॥ ओं भूः हृदयाय नमः ॥ ओं भुवः शिरसे स्वाहा ॥

CC-0. In Public Domain.Kavikulguru Kalidas Sanskrit University Ramtek Collection

गा० २

हा॥ ॐ स्वः शिखायै वषट्॥ ॐ तत्सवितुर्वरेण्यं कवचाय हुं॥ ॐ
भर्गो देवस्य धीमहि नेत्रत्रयाय वौषट्॥ धियो यो नः प्रचोदयात् ॐ द
स्त्राय फट्॥ इति करन्यासः॥ ॐ तत् तत्सवितुर्वरेण्यं क
टिदेशे भर्गो नाभौ देवस्य हृदये धीमहि कंठे॥ धियो नासिकाग्रे॥
यो नेत्रयोः॥ नो ललाटे ॐ भूः॥ ॐ भुवः ॐ स्वः ॐ महः॥ ॐ जनः ॐ त॥
पः॥ ॐ सत्यं॥ ॐ तत्सवितुर्वरेण्यं॥ भर्गो देवस्य धीमहि॥ धियो यो॥ २
नः प्रचोदयात्॥ ॐ आपो ज्योती रसोऽमृतं ब्रह्म भूर्भुवः स्व:

स्वरों॥ इति शिवमंत्र॥ इति ब्रह्मगायत्री॥ ॐ दाशरथाये विद्महे
सीतावल्लभाय धीमहि तन्नो रामः प्रचोदयात्॥ ॐ दाशरथये अंगुष्ठा
भ्यां नमः॥ विद्महे तर्जनीभ्यां नमः॥ सीतावल्लभाय मध्यमाभ्यां
धीमहि अनामिकाभ्यां नमः॥ तन्नो राम कनिष्ठिकाभ्यां नमः॥ प्रचोद
यात् करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः॥ ॐ दाशरथये हृदयाय नमः॥ विद्म
हे शिरसे स्वाहा॥ सीतावल्लभाय शिखायै वषट्॥ धीमहि कवचाय हुं॥ त
न्नो राम नेत्रत्रयाय वौषट्॥ प्रचोदयात् अस्त्राय फट्॥ इति रामगायत्री॥ २

CC-0. In Public Domain.Kavikulguru Kalidas Sanskrit University Ramtek Collection

॥ गा० ॥

॥ ३ ॥

ॐ नारायणाय विद्महे वासुदेवाय धीमहि तन्नो विष्णुं प्रचोदयात् ॥ ॐ
य नारांणाय अंगुष्ठाभ्यां नमः ॥ विद्महे तर्जनीभ्यां नमः ॥ वासुदेवाय म
ध्यमाभ्यां नम ॥ धीमहि अनामिकाभ्यां नमः ॥ तन्नो विष्णुं कनिष्ठिका
भ्यां नमः ॥ प्रचोदयात् करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः ॥ ॐ नारायणाय हृद
याय नमः ॥ विद्महे शिरसे स्वाहा ॥ वासुदेवाय सिखायै वषट् ॥ धीमहि
कवचाय हुं ॥ तन्नो विष्णुं नेत्रत्रयाय वौषट् ॥ प्रचोदयात् अस्त्राय फट् ॥
इति विष्णुगायत्री ॥ ॐ तत्पुरुषाय विद्महे महादेवाय धीमहि तन्नो रु

॥ २ ॥

द्र प्रचोदयात ॥ तत्पुरुषाय अंगुष्ठाभ्यां नमः ॥ विद्महे तर्जनीभ्यां नमः ॥ महा
देवाय मध्यमाभ्यां नम ॥ धीमहि अनामिकाभ्यां नमः ॥ तन्नो रुद्र कनिष्ठि
काभ्यां नमः ॥ प्रचोदयात् करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः ॥ ॐ तत्पुरुषाय हृदयाय
नमः ॥ विद्महे शिरसे स्वाहा ॥ महादेवाय शिखायै वषट् ॥ धीमहि कवचा
य हुं ॥ तन्नो रुद्र नेत्रत्रयाय वौषट् प्रचोदयात् अस्त्राय फट् ॥ इति रुद्रगायत्री
४ ॥ ॐ लक्ष्मीः भूर्भुवः लक्ष्मी सुवः कीलकं तन्नो महालक्ष्मीः प्रचोदया
त् ॥ ॐ लक्ष्मीः भूर्भुवः अंगुष्ठाभ्यां नमः ॥ लक्ष्मीः तर्जनीभ्यां नमः ॥ सुवः

CC-0. In Public Domain.Kavikulguru Kalidas Sanskrit University Ramtek Collection

॥गा०॥

॥४॥

मध्यमाभ्यांनमः॥ कौलकंअनामिकाभ्यांनमः॥ तन्नोमहालक्ष्मीःक
निष्टिकाभ्यांनमः॥ प्रचोदयात्करतलकरपृष्ठाभ्यांनमः॥ ॐलक्ष्मी
र्भूर्भुवःहृदयायनमः॥ लक्ष्मीशिरसेस्वाहा॥ सुवःशिखायैवषट्॥ का
लकंकवचायहुं॥ तन्नोमहालक्ष्मीनेत्रत्रयायवौषट्॥ प्रदयादस्त्रा
यफट्॥ इतिलक्ष्मीगायत्री॥ ॐउग्रनृसिंहायविद्महे॥ वज्रनखायधी
महितन्नोनृसिंहप्रचोदयात्॥ ॐउग्रनृसिंहायअंगुष्ठाभ्यांनमः॥ वि
द्महेतर्जनीभ्यांनमः॥ वज्रनखायमध्यमाभ्यांनमः॥ धीमहिअनामि ॥४॥

काभ्यांनमः॥ तन्नोनृसिंहकनिष्टिकाभ्यांनमः॥ प्रचोदयात्करत
लकरपृष्ठाभ्यांनमः॥ ॐउग्रनृसिंहायहृदयायनमः॥ विद्महेशि
रसेस्वाहा॥ वज्रनखायशिखायैवषट्॥ धीमहिकवचायहुं॥ तन्नो
नृसिंहनेत्रत्रयायवौषट्॥ प्रचोदयादस्त्रायफट्॥ इतिनृसिंहगाय
त्री॥ ॐदाशरथयेविद्महे अवत्तवेलायधीमहितन्नोलक्ष्मणप्रचोद
यात्॥ ॐदाशरथयेअंगुष्ठाभ्यांनमः॥ विद्महेशिरसेस्वाहा॥ अलवे
लायशिखायैवषट्॥ विद्महेतर्जनीभ्यांनमः॥ अलवेलायमध्यमा

CC-0. In Public Domain.Kavikulguru Kalidas Sanskrit University Ramtek Collection

॥गा०॥

॥५॥ भ्यां नमः ॥ धीमहि अनामिकाभ्यां नमः ॥ तन्नो लक्ष्मण कनिष्ठिका

भ्यां नमः ॥ प्रचोदयात करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः ॥ ॐ दाशरथये हृ

दयाय नमः ॥ विद्महे शिरसे स्वाहा ॥ अलबेलाय शिखायै वषट् ॥

धीमहि कवचाय हुं ॥ तन्नो लक्ष्मण नेत्रत्रयाय वौषट् ॥ प्रचोदयात् अस्त्रा

य फट् ॥ इति लक्ष्मण गायत्री ॥ ॐ देवकीनंदनाय विद्महे ॥ वासुदे

वाय धीमहि तन्नो कृष्ण प्रचोदयात ॥ ॐ देवकीनंदनाय अंगुष्ठा

भ्यां नमः ॥ विद्महे तर्जनीभ्यां नमः ॥ वासुदेवाय मध्यमाभ्यां नमः ॥ ॥५॥

धीमहि अनामिकाभ्यां नमः ॥ तन्नो कृष्ण कनिष्ठिकाभ्यां नमः ॥ प्र

चोदयात करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः ॥ ॐ देवकीनंदनाय हृदयाय

नमः ॥ विद्महे शिरसे स्वाहा ॥ वासुदेवाय शिखायै वषट् ॥ धीमहि क

वचाय हुं ॥ तन्नो कृष्ण नेत्रत्रयाय वौषट् ॥ प्रचोदयात् अस्त्राय फट् ॥

इति कृष्ण गायत्री ॥ ॐ गोपीजनवल्लभाय विद्महे वासुदेवाय धीम

हि तन्नो गोपाल प्रचोदयात ॥ ॐ गोपीजनवल्लभाय अंगुष्ठाभ्यां न

मः ॥ विद्महे तर्जनीभ्यां नमः ॥ वासुदेवाय मध्यमाभ्यां नमः ॥ धीम

CC-0. In Public Domain.Kavikulguru Kalidas Sanskrit University Ramtek Collection

॥गा०१॥
॥६॥

हिअंनामिकाभ्यांनमः॥ तन्नोगोपालकनिष्ठिकाभ्यांनमः॥ प्रचो
दयातकरतलकरपृष्ठाभ्यांनमः॥ ॐगोपीजनवल्लभायहृदया
यनमः॥ विद्महेशिरसेस्वाहा॥ वासुदेवायशिखायैवषट्॥ धीमहि
कवचायहुं॥ तन्नोगोपालनेत्रत्रयायवौषट्॥ प्रचोदयादस्त्रायफ
ट्॥ इतिगोपालगायत्री॥ ७॥ ॐयमदग्न्यायविद्महेमहावीराय।
धीमहितन्नोपरसुरामप्रचोदयात॥ ॐयमदग्न्यायअंगुष्ठाभ्यांन
मः॥ विद्महेतर्जनीभ्यांनमः॥ महावीरायमध्यमाभ्यांनमः॥ धी

॥६॥

महिअनामिकाभ्यांनमः॥ तन्नोपरसुरामःकनिष्ठिकाभ्यांनमः॥ प्र
चोदयातकरतलकरपृष्ठाभ्यां॥ ॐयमदग्न्यायहृदयायनमः॥ विद्म
हेशिरसेस्वाहा॥ महावीरायशिखायैवषट्॥ धीमहिकवचायहुं
तन्नोपरसुरामःनेत्रत्रयायवौषट्॥ प्रचोदयादस्त्रायफट्॥ इतिप
रसुरामगायत्री॥ १०॥ ॐतुलसीयायविद्महे त्रिपुरारियायधीमहि
तन्नोतुलसीप्रचोदयात॥ ॐतुलसीयायअंगुष्ठाभ्यांनमः॥ विद्म
हेतर्जनीभ्यांनमः॥ त्रिपुरीयायमध्यमाभ्यांनमः॥ धीमहिअना

CC-0. In Public Domain.Kavikulguru Kalidas Sanskrit University Ramtek Collection

गा॰ ८

मिकाभ्यां नमः ॥ तन्नो तुलसी कनिष्ठिकाभ्यां नमः ॥ प्रचोद याात
करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः ॥ ॐ तुलसीयाय हृदयाय नमः ॥ विद्महे
शिरसे स्वाहा ॥ त्रिपुरारियाय शिखायै वषट् ॥ प्रचोदयाात् अस्त्राय फ
ट् ॥ इति तुलसी गायत्री ॥ ॐ अंजनीसुताय विद्महे वायुपुत्राय धीम
हि तन्नो हनुमान प्रचोदयात ॥ ॐ अंजनीसुताय अंगुष्ठाभ्यां नमः
विद्महे तर्जनीभ्यां नमः ॥ वायुपुत्राय मध्यमाभ्यां नमः ॥ धीमहि अ
नामिकाभ्यां नमः ॥ तन्नो हनुमान कनिष्ठिकाभ्यां नमः ॥ प्रचोद

॥ ८ ॥

यात करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः ॥ ॐ अंजनीसुताय हृदयाय नमः ॥
विद्महे शिरसे स्वाहा ॥ वायुपुत्राय शिखायै वषट् ॥ धीमहि कवचा
य हुं ॥ तन्नो हनुमान नेत्रत्रयाय वौषट् प्रचोदयात् अस्त्राय फट् ॥ इ
ति हनुमान गायत्री ॥ १२ ॐ तत्पुरुषाय विद्महे स्वर्णपक्षाय धी
महि तन्नो गरुड प्रचोदयात ॥ ॐ तत्पुरुषाय अंगुष्ठाभ्यां नमः ॥ विद्म
हे तर्जनीभ्यां नमः ॥ स्वर्णपक्षाय मध्यमाभ्यां नमः ॥ धीमहि अना
मिकाभ्यां नमः ॥ तन्नो गरुड कनिष्ठिकाभ्यां नमः ॥ प्रचोदयात कर

CC-0. In Public Domain.Kavikulguru Kalidas Sanskrit University Ramtek Collection

गा०

८

तलकरपृष्ठाभ्यांनमः ॐतत्पुरुषायहृदयायनमः विद्महेशिर
सेस्वाहा स्वर्णपक्षायशिखायैवषट् धीमहिकवचायहुं त
न्नोगरुडनेत्रत्रयायवौषट् प्रचोदयादस्त्रायफट् इतिगरुड
गायत्री १३ ॐमहाज्वालायविद्महेअग्निमथनायधीमहितन्नो
ग्निप्रचोदयात् ॐमहाज्वालायअंगुष्ठाभ्यांनमः विद्महेतर्ज
नीभ्यांनमः अग्निमथनायमध्यमाभ्यांनमः धीमहिअनामिका
भ्यांनमः तन्नोग्निकनिष्ठिकाभ्यांनमः प्रचोदयात्करतलक ८

रपृष्ठाभ्यांनमः ॐमहाज्वालायहृदयायनमः विद्महेशिरसेस्वाहा
अग्निमथनायशिखायैवषट् धीमहिकवचायहुं तन्नोग्निनेत्र
त्रयायवौषट् प्रचोदयादस्त्रायफट् इतिअग्निगायत्री ॐपृथ्वीदेव्यै
८ विद्महेसहस्रमूर्तयेधीमहितन्नोपृथ्वीप्रचोदयात् ॐपृथ्वी
देव्यैअंगुष्ठाभ्यांनमः विद्महेतर्जनीभ्यांनमः सहस्रमूर्तयेम
ध्यमाभ्यांनमः धीमहिअनामिकाभ्यांनमः तन्नोपृथ्वीकनिष्ठि
काभ्यांनमः प्रचोदयात्करतलकरपृष्ठाभ्यांनमः ॐपृथ्वीदेव्यै

CC-0. In Public Domain.Kavikulguru Kalidas Sanskrit University Ramtek Collection

गा॰

९ हृदयायनमः ॥ विद्महे शिरसे स्वाहा ॥ महत्तमूर्तये शिखायै वष
ट् ॥ धीमहि कवचाय हुं ॥ तन्नो पृथ्वी नेत्रत्रयाय वौषट् ॥ प्रचोदया
त् अस्त्राय फट् ॥ इति पृथ्वी गायत्री ॥ ॐ जलबिंबाय विद्महे नीलपुरु
षाय धीमहि तन्नो अंबु प्रचोदयात ॥ ॐ जलबिंबाय अंगुष्ठाभ्यां न
मः ॥ विद्महे तर्जनीभ्यां नमः ॥ नीलपुरुषाय मध्यमाभ्यां नमः ॥
धीमहि अनामिकाभ्यां नमः ॥ तन्नो अंबु कनिष्ठिकाभ्यां नमः ॥
प्रचोदयात करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः ॥ ॐ जलबिंबाय हृदया य ॥ ९ ॥

यनमः ॥ विद्महे शिरसे स्वाहा ॥ नीलपुरुषाय शिखायै वषट् ॥ धीम
हि कवचाय हुं ॥ तन्नो अंबु नेत्रत्रयाय वौषट् ॥ प्रचोदयात् अस्त्राय फ
ट् ॥ इति जलगायत्री ॥ १६ ॥ ॐ आकाशाय विद्महे नभयाय धीमहि
तन्नो गगन प्रचोदयात ॥ ॐ आकाशाय अंगुष्ठाभ्यां नमः ॥ विद्म
हे तर्जनीभ्यां नमः ॥ नभयाय मध्यमाभ्यां नमः ॥ धीमहि अनामिकाभ्यां
नमः ॥ तन्नो गगन कनिष्ठिकाभ्यां नमः ॥ प्रचोदयात् करतलकरपृ
ष्ठाभ्यां नमः ॥ ॐ आकाशाय हृदयाय नमः ॥ विद्महे शिरसे स्वाहा ॥

CC-0. In Public Domain.Kavikulguru Kalidas Sanskrit University Ramtek Collection

॥गा॰॥

॥१०॥

नमयाय शिखायै वषट्‌ ॥ धीमहि कवचाय हुं ॥ तन्नो गगननेत्राय वौषट् ॥ प्रचोदयाद् स्त्राय फट् ॥ इति आकाश गायत्री ॥ ॐ भास्कराय विद्महे दिवाकराय धीमहि तन्नो सूर्यः प्रचोदयात् ॥ ॐ भास्कराय अंगुष्ठाभ्यां नमः ॥ विद्महे तर्जनीभ्यां नमः ॥ दिवाकराय मध्यमाभ्यां नमः ॥ धीमहि अनामिकाभ्यां नमः ॥ तन्नो सूर्यः कनिष्ठिकाभ्यां नमः ॥ प्रचोदयात् करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः ॥ ॐ भास्कराय हृदयाय नमः ॥ विद्महे शिरसे स्वाहा ॥ दिवाकराय शिखा ॥१०॥

यै वषट् ॥ धीमहि कवचाय हुं ॥ तन्नो सूर्यनेत्राय वौषट् प्रचोदयात् अस्त्राय फट् इति सूर्यगायत्री ॥ १४ ॥ ॐ क्षीरपुत्राय धीमहि अमृततापाय धीमहि तन्नो चंद्र प्रचोदयात् ॥ ॐ क्षीरपुत्राय अंगुष्ठाभ्यां नमः ॥ विद्महे तर्जनीभ्यां नमः ॥ अमृततापाय मध्यमाभ्यां नमः ॥ धीमहि अनामिकाभ्यां नमः ॥ तन्नो चंद्र कनिष्ठिकाभ्यां नमः ॥ प्रचोदयात् करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः ॥ ॐ क्षीरपुत्राय हृदयाय नमः ॥ विद्महे शिरसे स्वाहा ॥ अमृततापाय शिखायै व

CC-0. In Public Domain.Kavikulguru Kalidas Sanskrit University Ramtek Collection

॥गा०॥

॥११॥ षट्॥ धीमहि कवचाय हुं॥ तन्नो चंड नेत्रत्रयाय वौषट्॥ प्रचोदयादस्त्रा
यफट्॥ इति चंडगायत्रि॥ १८॥ ॐ प्रवसीय विद्महे गुरु व्यक्ताय धीम
हि तन्नो गुरु प्रचोदयात्॥ ॐ प्रवसीय अंगुष्ठाभ्यां नमः॥ विद्महेत
य र्जनीभ्यां नमः॥ गुरु व्यक्ता मध्यमाभ्यां नमः॥ धीमहि अनामिका
भ्यां नमः॥ तन्नो गुरु कनिष्ठिकाभ्यां नमः॥ प्रचोदयात करतलकरपृ
ष्ठाभ्यां नमः॥ ॐ प्रवसीय हृदयाय नमः॥ विद्महे शिरसे स्वाहा॥ गुरु
व्यक्ताय शिखायै वषट्॥ धीमहि कवचाय हुं॥ तन्नो गुरु नेत्रत्रयाय वौ ॥११॥

षट्॥ प्रचोदयाद् अस्त्राय फट्॥ इति गुरु गायत्री॥ १९॥ ॐ पवनपुरुषाय
विद्महे सहस्रमूर्तये धीमहि तन्नो वायु प्रचोदयात्॥ ॐ पवन
पुरुषाय अंगुष्ठाभ्यां नमः॥ विद्महे तर्जनीभ्यां नमः॥ सहस्रमू
र्तये मध्यमाभ्यां नमः॥ धीमहि अनामिकाभ्यां नमः॥ तन्नो वायु
कनिष्ठिकाभ्यां नमः॥ प्रचोदयात करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः॥ ॐ
पवनपुरुषाय हृदयाय नमः॥ विद्महे शिरसे स्वाहा॥ सहस्र
मूर्तये शिखायै वषट्॥ धीमहि कवचाय हुं॥ तन्नो वायु नेत्रत्रया

CC-0. In Public Domain.Kavikulguru Kalidas Sanskrit University Ramtek Collection

॥गा॰॥

॥१२॥ यवौषट्॥प्रचोदयात् स्वाहा फट्॥इतिपवनगायत्री॥२४॥ॐपरमहंसाय विद्महे महंतंसाय धीमहि तन्नोहंसः प्रचोदयात्॥ॐपरमहंसाय अंगुष्ठाभ्यांनम॥विद्महे तर्जनीभ्यांनमः॥महंतंसाय मध्यमाभ्यांनमः॥धीमहि अनामिकाभ्यांनमः॥तन्नोहंसः कनिष्ठिकाभ्यांनमः॥प्रचोदयात् करतलकरपृष्ठाभ्यांनमः॥ॐपरमहंसाय हृदयायनमः॥विद्महे शिरसे स्वाहा॥महंतंसाय शिखायैवषट्॥धीमहि कवचायहुं॥तन्नोहंसः नेत्रत्रयाय वौष ॥१२॥

ट्॥प्रचोदयात् स्वाहा फट्॥इतिहंसगायत्री॥२५॥ॐसुभगायै विद्महे काममाल्यन्यै धीमहि तन्नोगौरी प्रचोदयात्॥ॐसुभगायै अंगुष्ठाभ्यांनम॥विद्महे तर्जनीभ्यांनमः॥काममालन्यै मध्यमाभ्यांनम॥धीमहि अनामिकाभ्यांनमः॥तन्नोगौरी कनिष्ठिकाभ्यांनमः॥प्रचोदयात करतलकरपृष्ठाभ्यांनमः॥ॐसुभगायै हृदयायनमः॥विद्महे शिरसे स्वाहा॥काममाल्यन्यै शिखायैवषट्॥धीमहि कवचायहुं॥तन्नोगौरी नेत्रत्रयाय वौषट्

CC-0. In Public Domain.Kavikulguru Kalidas Sanskrit University Ramtek Collection

गा॰

१३ प्रचोदयाद स्वाहा फट् इति गौरी गायत्री २३ गें देवी मरौ विद्महे
महाशक्तिं धीमहि तन्नो देवी प्रचोदयात् गें देवी मरौ अंगुष्ठाभ्यां
नमः विद्महे तर्जनीभ्यां नमः महाशक्तिं मध्यमाभ्यां नमः धीम
हि अनामिकाभ्यां नमः तन्नो देवी कनिष्ठिकाभ्यां नमः प्रचो
दयात् करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः गें देवी मरौ हृदयाय नमः वि
द्महे शिरसे स्वाहा महाशक्तिं शिखायै वषट् धीमहि कवचा
यहुं तन्नो देवी नेत्रत्रयाय वौषट् प्रचोदयाद स्वाहा फट् इति दे १३

वी गायत्री गें कत्रस्कं धीय विद्महे कत्रश्यामाय धीमहि तन्नो क
त्रश्यामाय प्रचोदयात् गें कत्रस्कं धाय अंगुष्ठाभ्यां नमः वि
द्महे तर्जनीभ्यां नमः कत्रश्यामाय मध्यमाभ्यां नमः धी
महि अनामिकाभ्यां नमः तन्नो कत्रश्यामाय कनिष्ठिकाभ्यां
नमः प्रचोदयात् करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः गें कत्रस्कं धा
य हृदयाय नमः विद्महे शिरसे स्वाहा कत्रश्यामाय शिखा
यै वषट् धीमहि कवचाय हुं तन्नो कत्रश्यामाय नेत्रत्रयाय

CC-0. In Public Domain.Kavikulguru Kalidas Sanskrit University Ramtek Collection

गा॰

बोधव्यु प्रचोदयादस्त्रायफट् ॥ इतिकलस्यामगायत्री ॥ २५

१८ ॥ इतिचौवीसगायत्री ॥ संपूर्णं ॥ समाप्तं ॥ श्रीरामचंद्रायनमः

॥ १८ ॥

CC-0. In Public Domain.Kavikulguru Kalidas Sanskrit University Ramtek Collection

[OrderDescription]
,CREATED=07.08.19 14:07
,TRANSFERRED=2019/08/07 at 14:12:19
,PAGES=16
,TYPE=STD
,NAME=S0001378
,Book Name=M-90-CHOUBISH GAYATRI\
,ORDER_TEXT=
,[PAGELIST]
,FILE1=00000001.TIF
,FILE2=00000002.TIF
,FILE3=00000003.TIF
,FILE4=00000004.TIF
,FILE5=00000005.TIF
,FILE6=00000006.TIF
,FILE7=00000007.TIF
,FILE8=00000008.TIF
,FILE9=00000009.TIF
,FILE10=00000010.TIF
,FILE11=00000011.TIF
,FILE12=00000012.TIF
,FILE13=00000013.TIF
,FILE14=00000014.TIF
,FILE15=00000015.TIF
,FILE16=00000016.TIF
,

CC-0. In Public Domain.Kavikulguru Kalidas Sanskrit University Ramtek Collection